मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने चुनाव प्रक्रिया में सुधार और बार-बार के चुनावों से देश को निजात दिलाने के अपने सुझावों पर आम सहमति बनाने की पहल के लिए विधायकों, सांसदों, विभिन्न राजनैतिक दलों के राष्ट्रीय नेताओं, पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से सहयोग मांगा है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने इन सभी को पृथक-पृथक भेजे गये चार पत्र के माध्यम से यह सहयोग चाहा है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपने पत्र में भारतीय लोकतंत्र की गणना विश्व के विशाल लोकतंत्र के रूप में करते हुए उसकी सीमाएं भी बतायी हैं। उन्होंने कहा कि आम चुनावों ने चुनाव-दर-चुनाव लोकतंत्र को समृद्ध और मजबूत बनाया। वर्ष 1970 तक विधानसभा व लोकसभा के चुनाव एक साथ होते रहे हैं और ये दोनों संवैधानिक संस्थाएं अपना पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा करती रही हैं। उन्होंने कहा कि 1970 के बाद एक तरफ जहां लोकसभा व विधानसभा के चुनाव अलग-अलग कराये जाने लगे वहीं विधानसभा और लोकसभा के मध्यावधि चुनाव की स्थिति भी बनी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पत्र में कहा कि लोकसभा तथा विधानसभाओं के चुनाव अलग-अलग होने से चुनाव संपन्न कराने का खर्च दुगना हो जाता है, वहीं चुनावों में धन-बल के बढ़ते उपयोग के कारण कालेधन की अर्थव्यवस्था पनपने लगी है। बार-बार चुनाव होने से आचार संहिता के चलते जन-कल्याण के कार्यक्रमों पर विपरीत असर पड़ता है तथा विकास की गति अवरुद्ध होती है। श्री चौहान के अनुसार खंडित जनादेशों ने मजबूरी के मुख्यमंत्रियों और कभी-कभी प्रधानमंत्रियों को जन्म दिया है।

श्री चौहान ने इस स्थिति में चुनाव प्रक्रिया सुधार की दिशा में लोकसभा व विधानसभा चुनाव एक साथ होने और दोनों का कार्यकाल खंडित न होकर संविधानसम्मत 5 वर्ष का होने की बात पत्र में कही है। इसी तरह उन्होंने मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री का चुनाव सीधे मतदाताओं द्वारा किया जाने और मान्यता प्राप्त दलों के चुनाव खर्च के लिए स्टेट फंडिंग की व्यवस्था पर भी जोर दिया है। श्री चौहान ने पत्र में विश्वास व्यक्त किया है कि उनके इन चुनाव सुधार संबंधी सुझावों से सब सहमत होंगे।

श्री चौहान ने विधायकों और सांसदों को लिखे पत्र में एक अनुभवी और कर्मठ जन प्रतिनिधि के नाते उनसे इन सुझावों पर अपने-अपने दलों में आम सहमति बनाने की पहल का अनुरोध किया है। मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय नेताओं को लिखे पत्र में उन्हें देश का मूर्धन्य नेता और अपने दल सहित राज्य सहित भारतीय राजनीति में उनके सम्मान और स्वीकार्यता का हवाला देते हुए चुनाव प्रक्रिया में सुधार के उनके प्रयासों में अपने सुझावों को भी शामिल करने का आग्रह किया है। श्री चौहान ने राष्ट्रीय नेताओं से कहा कि उनकी पहल से इन सुझावों के प्रति सभी दलों के बीच राष्ट्रीय सहमति का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सामाजिक कार्यकर्ताओं को लिखे पत्र में उनसे अपने-अपने कार्यक्षेत्र में चुनाव सुधारों के प्रति आम सहमति बनाने की पहल का आग्रह किया। इसी तरह पत्रकारों को लिखे पत्र में भी श्री चौहान ने चुनाव सुधार संबंधी अपने चारों सुझाव के प्रति जनमानस में जागरूकता पैदा करने में सहयोग मांगा है। उन्होंने कहा कि समाज में नई चेतना पैदा करने और जनमानस को प्रभावित करने की मीडिया की क्षमता से सब बाकिफ हैं। उन्होंने सभी चार पत्रों में विश्वास व्यक्त किया है कि हम-आप सबके सहयोग से देश की चुनावी प्रक्रिया सही मायनों में लोकतंत्र को मजबूत करने वाली तथा जनकल्याणकारी स्वरूप ले सकेगी।

आवरण कथा

'विकास के लिए लगातार चुनावों से मुक्ति जरूरी'

मुख्यमंत्री के चुनाव सुधारों संबंधी चार सुझाव

राजनैतिक दलों के नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और मीडिया से सहयोग की अपील

❖